Tilak Raj Betab

तिलक राज बेताब

रोज़गार नहीं, घर नहीं, बेइंतहा मुश्किलें और अमीरी से गरीबी की खाई में।

शुरुआत

मेरा नाम तिलक राज बेताब है। मेरा जन्म लाहौर में हुआ था और मैं अपने भाई-बहनों में दसवाँ था। मैं एक काफी बड़े घर में रहता था, और हमारे आस-पास पाँच मुसलमानों, एक हिंदू और एक सिख का मकान था। हमारी गली शाह आलमी दरवाजा और लाहौरी दरवाजे के बीच थी। यही वह जगह थी जहाँ से दंगों की शुरुआत हुई थी।

शुरुआती गड़बड़ों के समय हम अपने घर में रह रहे थे। कुछ दिनों तक हिंसा हुई और फिर कुछ दिनों के लिए शांति छा गई। कुछ ऐसे लोग थे जो चाहते थे कि दंगे जारी रहें।

लाहौर में हुई पहली घटना सुनियोजित थी जबकि एक हिंदू जुलूस आने वाला था। कुछ षडयंत्रकारी नेताओं/उपद्रवियों ने जुलूस के एक खास जगह पर पहुँचने पर उस पर हमला करने की योजना बनाई थी। जब वह जुलूस हमारे इलाके में पहुँचा, जिसका नाम चौक माटी था और वहाँ ढेरों कसाई रहते थे, तो उन्होंने छुरेबाजी शुरू कर दी और छतों के ऊपर से काफ़ी पत्थरबाजी हुई।

जब मैंने देखा कि कोई आदमी चौक माटी इलाके से लाशों को ठीक हमारे घर के आगे से लेकर जा रहा है, क्योंकि उस समय तक पुलिस पहुँच गई थी, तो मैं डर गया। वहाँ एक आदमी था; वह एक बार में एक लाश ले जा रहा था। उस समय छुरेबाजी में वहाँ 12-14 लोग मारे गए थे।

हम लंबे समय तक अपने घर के अंदर ही रहे, और फिर एक वक्त आया जबकि हमें दीवार के ऊपर से कूदकर अपने बगल के सिख परिवार के घर जाना पड़ा। वहाँ से हमें दीवारों के ऊपर से कूदकर अगली गली तक जाना पड़ा, फिर उससे अगली गली... कुछ महीनों तक हम अपने पिता के एक मित्र के यहाँ रहे। हम कभी एक चाची के यहाँ रहते तो फिर कभी किसी दूसरी चाची के यहाँ...

सारा परिवार नहीं गया; परिवार के 3 सदस्य शाम के समय हमेशा घर में होते थे, आधी रात के वक्त तक पड़ोसियों से बातें करते थे -- वे मुसलमान थे, वे एक-दूसरे से बातें करते रहते और नजर रखे रहते।

शाह आलमी दरवाजे को जलाकर खाक कर दिया गया था, जो कि हिंदुओं के स्वामित्व वाला सबसे बड़ा व्यापारिक केंद्र था। लाखों के सामान और जायदाद को तहस-नहस कर दिया गया था। दरअसल, उस इलाके को लगभग पूरी तरह बर्बाद करके राख में बदल दिया गया था।

एक अच्छी बात यह थी कि हम कलाकारों के एक परिवार को जानते थे जो कि हमारे बहुत करीब रहा करते थे। 11 या 14 अगस्त के दिन, उन्होंने मेरे पिता के नाम एक संदेश भेजा : "चाचा जी, रात को नहीं रुकें। अगर आप रात को रुकेंगे तो मारे जाएंगे।" तो हमने उसी समय लाहौर और पाकिस्तान छोड़ दिया।

(डोमिनिक :) अगर आप पीछे मुड़कर देखें, तो आप पर और आपके परिवार पर बँटवारे का क्या असर पड़ा?

(राज) परिवार बिखर गया; एक या दो जगह पर सारे लोग होते, इसके बजाय वे सब जगह बिखर गए। कोई रोज़गार नहीं, कोई घर नहीं, बेइंतहा मुश्किलें और हम अमीरी से गरीबी की खाई में गिर गए।

हिंदुस्तान के इतिहास में पहले कभी इस तरह की कोई घटना नहीं हुई थी। हमने कभी भी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा और यह कि हम फिर कभी भी लाहौर नहीं लौट पाएंगे।

समाप्त